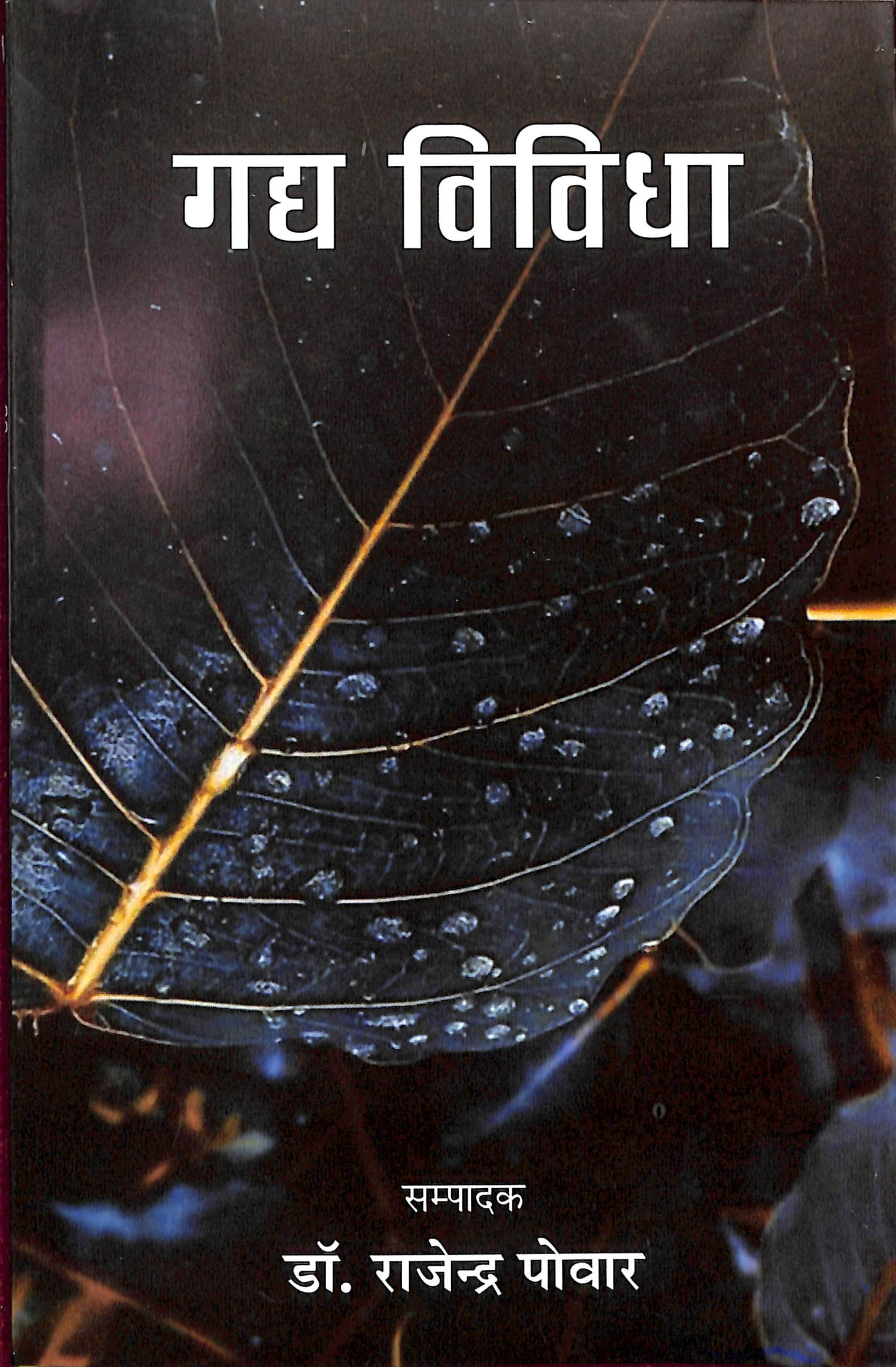

गद्य विविधा

सम्पादक
डॉ. राजेन्द्र पोवार

हिन्दी अध्ययन मंडल सदस्य

डॉ. राजेन्द्र पोवार
अध्यक्ष : हिन्दी विभाग
आरपीडी कला तथा वाणिज्य महाविद्यालय, बेळगावी

प्रो. सी. मदन मोहन रेड्डी
असोसिएट प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
विवेकानन्द स्नातक महाविद्यालय
बेंगळुरु (कर्नाटक)

गद्य विविधा

[रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेळगावी (कर्नाटक) के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार
बी.ए./बी.एस.डब्ल्यू./सी.सी.जे. हिन्दी तृतीय सत्र के लिए पठित पुस्तक)]

BA/B.S.W./C.C.J. Third Semester
AECC (Ability Enhancement Compulsory Course)
Hindi Text Book

सम्पादक

डॉ. राजेन्द्र पोवार

हिन्दी विभागाध्यक्ष
आरपीडी कला तथा वाणिज्य महाविद्यालय, बेळगावी (कर्नाटक)

सहयोगी सम्पादक

डॉ. बी.एम. राठोड

हिन्दी विभाग, एस.व्ही.एम. कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, इलकल

डॉ. के.बी. चौगुले

हिन्दी विभाग, श्रीमती कुसुमावती मिर्जी कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, बेडकीहाळ, ता. चिकोडी

डॉ. राजशेखर उमेश जाधव

हिन्दी विभाग, विश्वभारती प्रथम दर्जा महाविद्यालय, तुरनुर, ता. रामदुर्ग

राधाकृष्ण प्रकाशन

ISBN : 978-93-91950-00-2

© सर्वाधिकार सुरक्षित

पहला संस्करण : 2021

मूल्य : ₹60

प्रकाशक

राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड

जी-17, जगतपुरी, दिल्ली-110 051

शाखाएँ : अशोक राजपथ, साइंस कॉलेज के सामने, पटना-800 006

पहली मंजिल, दरबारी बिल्डिंग, महात्मा गांधी मार्ग, प्रयागराज-211 001

36 ए, शेक्सपियर सरणी, कोलकाता-700 017

वेबसाइट : www.radhakrishnaprakashan.com

ई-मेल : info@radhakrishnaprakashan.com

मुद्रक : बी.के. ऑफसेट

नवीन शाहदरा, दिल्ली-110 032

GADHYA VIVIDHA

Edited by Dr. Rajendra Powar, Dr. B.M. Rathod,
Dr. K.B. Chougule, Dr. Rajshekhar Jadhav

इस पुस्तक के सर्वाधिकार सुरक्षित हैं। प्रकाशक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को, फोटोकॉपी एवं रिकॉर्डिंग सहित इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुन:प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित-प्रसारित नहीं किया जा सकता।

क्रम

भूमिका		*7*
महादेवी वर्मा		**9**
स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न	*निबन्ध*	12
हरिशंकर परसाई		**21**
मैं नर्क से बोल रहा हूँ!	*व्यंग्य*	23
नागार्जुन		**27**
प्रेमचन्द : एक व्यक्तित्व	*संस्मरण*	30
कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'		**34**
बयालीस के ज्वार की उन लहरों में	*रिपोर्ताज*	36
रामवृक्ष बेनीपुरी		**42**
रज़िया	*रेखाचित्र*	45
धर्मवीर भारती		**53**
ठेले पर हिमालय	*यात्रा वर्णन*	56
ममता कालिया		**62**
यहाँ रोना मना है	*एकांकी*	64
प्रा. धन्यकुमार बिराजदार		**75**
हिन्दी और रोजगार	*निबन्ध*	77
संक्षेपण		81
समानार्थी शब्द (पर्यायवाची शब्द)		90
विपरीतार्थक शब्द (विलोम शब्द)		92
अनेकार्थक शब्द		94

भूमिका

हिन्दी साहित्य में आधुनिक युग को गद्य युग कहा जाता है। संसार की समस्त प्रमुख भाषाओं में पहले पद्य और फिर गद्य में रचना हुई। अतएव गद्य साहित्य का विकसित रूप है। दैनिक जीवन में गद्य, पद्य की अपेक्षा हमारे अधिक निकट है। हम अपने विचारों को अधिकांशत: गद्य के माध्यम से ही व्यक्त करते हैं। हिन्दी साहित्य मे वर्तमान युग में अधिकतर रचनाओं का माध्यम गद्य ही है। साहित्यकार गद्य की विधाएँ यथा—नाटक, उपन्यास, कहानी, आलोचना, निबन्ध, आत्मकथा, जीवनी, रिपोर्ताज, व्यंग्य, डायरी आदि में अपनी रचना सुगमता से पाठकों तक पहुँचाकर हिन्दी में गद्य की सेवा कर रहे हैं। उपन्यास, कहानी, आत्मकथा जीवनी और व्यंग्य रचनाएँ वर्तमान में खासी लोकप्रिय हैं तथा पाठकों के बीच इन विधाओं की रचनाओं का आग्रह भी अधिक रहता है गद्य हिन्दी साहित्य में हमेशा ही समान्तर महत्त्व को पाता रहा है, कभी-कभी समान्तर से ज्यादा भी।

भारतीय शिक्षण व्यवस्था में हिन्दी के राष्ट्रीय भाषा होने के नाते प्रमुख स्थान रहा है, जिसमें पद्य एवं गद्य की शिक्षा समान रूप से विषय और विधा की समग्रता के साथ प्रदान की जाती है। विद्यार्थियों में गद्य के शैक्षिक महत्त्व को देखते हुए विषय अध्ययन की आवश्यकतानुसार गद्य विधाओं का यह संकलन रानी चन्नम्मा विश्वविद्यालय, बेळगावी कर्नाटक के बी.ए./बी.एस.डब्ल्यू/सी.सी.जे. हिन्दी तृतीय सत्र में अध्ययनरत छात्रों के लिए विविध विधाओं का यह संकलन 'गद्य विविधा' पाठ्यपुस्तक के रूप में प्रस्तुत है यह पाठ्यपुस्तक नवीनतम सीबीसीएस पाठ्यक्रम को दृष्टिगत रखते हुए छात्रों के लिए संकलित की गई है।

पाठ्यक्रम की आवश्यकता तथा छात्रों के ज्ञानवर्धन के लिए प्रस्तुत 'गद्य विविधा' में हिन्दी के अप्रतिम और महनीय साहित्यकारों की विभिन्न गद्य विधाओं की प्रतिनिधि रचनाओं को शामिल किया गया है। गद्य की सात विधाओं में आठ रचनाएँ चयनित की गई हैं जिनमें महादेवी वर्मा की स्त्री-विमर्श की निबन्ध रचना 'स्त्री के अर्थ स्वातंत्र्य का प्रश्न', हरिशंकर परसाई का प्रसिद्ध व्यंग्य 'मैं नरक से बोल रहा हूँ'। नागार्जुन के मुंशी प्रेमचन्द के साथ बिताए क्षणों की संस्मरण रचना 'प्रेमचन्द : एक व्यक्तित्व', कन्हैयालाल प्रभाकर मिश्र का रिपोर्ताज 'बयालीस के

ज्वार की उन लहरों में', रामवृक्ष बेनीपुरी का रेखाचित्र 'रजिया', धर्मवीर भारती का यात्रा-वर्णन 'ठेले पर हिमालय', ममता कालिया का एकांकी 'यहाँ रोना मना है', और प्रा धन्यकुमार बिराजदार की निबन्ध रचना 'हिन्दी और रोजगार' शामिल हैं। इन सभी गद्यात्मक रचनाओं के साथ छात्रों को अपने विचारों को कम-से-कम शब्दों में अधिकाधिक स्पष्टता और पूर्णता के साथ व्यक्त करने की कला सिखाने के उद्देश्य से 'संक्षेपण' अध्याय भी इसमें जोड़ा गया है। इसके साथ ही छात्रों के शब्द सम्पदा को और अधिक समृद्ध करने हेतु समानार्थी शब्द, विपरीतार्थक शब्द एवं अनेकार्थक शब्द नाम के तीन अध्याय भी शामिल किए गए हैं।

प्रस्तुत विधाओं के चयन करते समय हमने वर्तमान हिन्दी साहित्य के परिवेश में पल्लवित विकसित होनेवाले छात्रों को केन्द्र में रखा है, गद्य की प्रस्तुत विधाओं से स्नातक स्तरीय विद्यार्थियों का परिचय हो तथा प्रतिनिधि रचनाओं को पढ़कर छात्र हिन्दी के गद्यज्ञान से खुद को लाभान्वित करें, यह इस संकलन का उद्देश्य है हमने इस बात की ओर भी ध्यान दिया है कि छात्रों के ज्ञानार्जन के साथ उनका व्यक्तित्व विकास भी हो एवं विभिन्न विधाओं और शब्दों के अध्ययन के साथ वे अपनी ज्ञान सम्पदा बढ़ाएँ और अपनी बौद्धिकता को मौलिक विस्तार दें।

संकलित विविध गद्य विधाओं से सुसज्जित 'गद्य विविधा' पाठ्यपुस्तक का सम्पादन कार्य कोरोना संक्रमण काल के कठिन दौर में अथक परिश्रम से किया गया है। इस संकलन में अनेक सहयोगी रहे जो कि अनेकानेक धन्यवाद के पात्र हैं। संकलन को पाठ्यपुस्तक का स्वरूप कर छात्रों के हाथों तक पहुँचाने में राजकमल प्रकाशन की महती भूमिका रही है जिनका उद्देश्य छात्रों को गुणवत्तापूर्ण कम मूल्य की अच्छी पाठ्यपुस्तकें उपलब्ध करने का हमेशा ही रहा है। राजकमल प्रकाशन का इसके लिए अनेक अनेक धन्यवाद/आभार, हिन्दी आलोचक सुधीजन 'गद्य विविधा' पर अपनी प्रतिक्रिया हमें अवश्य भेजें ताकि भविष्य में हम इसका त्रुटिरहित परिवर्धित संस्करण प्रस्तुत कर सकें।

—सम्पादक

आवरण परिकल्पना : राधाकृष्ण स्टूडियो

राधाकृष्ण प्रकाशन

गद्य संकलन

₹60

9 789391 950002

www.radhakrishnaprakashan.com